



# झांसी मंडल में धार्मिक पर्यटन का क्षेत्रीय विकास प्रतिमान: एक बहुआयामी विश्लेषण

पूनम वर्मा

शोधार्थी, इतिहास विभाग  
यूजीसी-नेट (जेआरएफ)  
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी

शोध-निर्देशक:

प्रो. (डॉ.) अजीत सिंह  
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग  
बुंदेलखंड कॉलेज, झांसी

## सार

यह शोध पत्र झांसी मंडल में धार्मिक पर्यटन को क्षेत्रीय विकास के एक प्रतिमान के रूप में विश्लेषित करता है तथा इसके बहुआयामी प्रभावों का मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में धार्मिक पर्यटन को केवल आस्था-आधारित गतिविधि न मानकर आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और अवसंरचनात्मक विकास के प्रेरक तत्व के रूप में परखा गया है। झांसी, ललितपुर और जालौन जनपदों में स्थित धार्मिक स्थलों पर आधारित पर्यटन गतिविधियाँ स्थानीय अर्थव्यवस्था में आय प्रवाह, रोजगार सृजन तथा लघु उद्यमिता को प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि धार्मिक आयोजनों और तीर्थ यात्राओं के माध्यम से क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियाँ सक्रिय होती हैं तथा आधारभूत संरचना के विकास को गति मिलती है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि धार्मिक पर्यटन सांस्कृतिक संरक्षण और क्षेत्रीय पहचान को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तथापि, अवसंरचना की सीमाएँ, पर्यावरणीय दबाव तथा प्रबंधन संबंधी चुनौतियाँ इसकी पूर्ण क्षमता को प्रभावित करती हैं। निष्कर्षतः यह शोध प्रतिपादित करता है कि योजनाबद्ध नीति, सामुदायिक सहभागिता और सतत विकास दृष्टिकोण के साथ धार्मिक पर्यटन झांसी मंडल में संतुलित और समावेशी क्षेत्रीय विकास का प्रभावी प्रतिमान बन सकता है।

**प्रमुख शब्द** - धार्मिक पर्यटन, क्षेत्रीय विकास प्रतिमान, झांसी मंडल, बहुआयामी विश्लेषण, आर्थिक बहुगुणक प्रभाव

## 1. प्रस्तावना

### 1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

भारत में धार्मिक पर्यटन की परंपरा अत्यंत प्राचीन और गहन सांस्कृतिक आधार पर स्थापित है। वैदिक एवं पुराणकालीन साहित्य में तीर्थाटन को आध्यात्मिक शुद्धि और सामाजिक समरसता का माध्यम माना गया है। काशी, प्रयाग, गया

और अन्य पवित्र स्थलों की यात्राएँ भारतीय समाज में धार्मिक जीवन का अनिवार्य अंग रही हैं। धार्मिक यात्रा ने न केवल आध्यात्मिक चेतना को सुदृढ़ किया, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों के बीच सांस्कृतिक संपर्क और आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा दिया। आधुनिक काल में धार्मिक पर्यटन ने संगठित आर्थिक स्वरूप ग्रहण किया है। भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के अनुसार घरेलू पर्यटन में धार्मिक यात्राओं का महत्वपूर्ण योगदान है, जिससे स्थानीय व्यापार, परिवहन और आतिथ्य क्षेत्र को व्यापक लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार धार्मिक पर्यटन केवल आस्था-आधारित गतिविधि नहीं, बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक संरचना का भी महत्वपूर्ण घटक बन चुका है।

बुंदेलखंड क्षेत्र ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से विशिष्ट पहचान रखता है। यहाँ के मंदिर, दुर्ग, आश्रम और वार्षिक मेले क्षेत्रीय सांस्कृतिक जीवन के केंद्र रहे हैं। यह क्षेत्र लोक परंपराओं, धार्मिक उत्सवों और सांस्कृतिक आयोजनों के कारण पर्यटन की दृष्टि से संभावनाशील है। झांसी मंडल, जिसमें झांसी, ललितपुर और जालौन जनपद सम्मिलित हैं, धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व का संगम प्रस्तुत करता है। झांसी किला यद्यपि मुख्यतः ऐतिहासिक स्मारक है, तथापि क्षेत्र की सांस्कृतिक-धार्मिक पहचान से भी जुड़ा हुआ है। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय मंदिर, देवी-स्थल और वार्षिक धार्मिक मेले बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। उत्तर प्रदेश शासन की क्षेत्रीय विकास रिपोर्टों में बुंदेलखंड को पर्यटन की दृष्टि से संभावनाशील क्षेत्र माना गया है। इस प्रकार धार्मिक पर्यटन झांसी मंडल में सांस्कृतिक धरोहर, आस्था और आर्थिक गतिविधियों के मध्य एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करता है।

## 1.2 अध्ययन की आवश्यकता

धार्मिक पर्यटन को केवल सांस्कृतिक घटना के रूप में नहीं, बल्कि क्षेत्रीय विकास प्रतिमान के रूप में समझना आवश्यक है। झांसी मंडल में धार्मिक पर्यटन के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं अवसंरचनात्मक आयामों का समेकित विश्लेषण अपेक्षित है। वर्तमान में उपलब्ध अधिकांश अध्ययन ऐतिहासिक या सांस्कृतिक पक्ष तक सीमित हैं, जबकि बहुआयामी विश्लेषण का अभाव है। अतः यह अध्ययन धार्मिक पर्यटन को क्षेत्रीय विकास के समग्र मॉडल के रूप में परखने का प्रयास करता है।

## 1.3 अध्ययन के उद्देश्य

1. धार्मिक पर्यटन के क्षेत्रीय विकास प्रतिमान का विश्लेषण करना।
2. आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।
3. झांसी मंडल में धार्मिक पर्यटन की संरचनात्मक चुनौतियों की पहचान करना।
4. सतत एवं समावेशी विकास हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

## 1.4 अनुसंधान प्रश्न

1. क्या धार्मिक पर्यटन झांसी मंडल में क्षेत्रीय विकास का प्रभावी प्रतिमान बन सकता है?
2. धार्मिक पर्यटन के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयाम क्या हैं?
3. अवसंरचना एवं नीतिगत स्तर पर कौन-सी चुनौतियाँ विद्यमान हैं?
4. सतत विकास के संदर्भ में धार्मिक पर्यटन की क्या संभावनाएँ हैं?

## 2. साहित्य समीक्षा

### 2.1 धार्मिक पर्यटन की वैचारिक रूपरेखा

धार्मिक पर्यटन की वैचारिक पृष्ठभूमि तीर्थाटन की ऐतिहासिक परंपरा से जुड़ी हुई है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में तीर्थयात्रा केवल धार्मिक कर्तव्य नहीं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक संवाद का माध्यम रही है। एक (2012) के अनुसार भारत की पवित्र भूगोल ने विभिन्न तीर्थ स्थलों को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बाँधा, जिससे यात्रा धार्मिक अनुभव के साथ-साथ सांस्कृतिक संपर्क का साधन भी बनी (एक, 2012, पृ. 67)। इसी प्रकार टर्नर (1978) ने तीर्थयात्रा को सामूहिक चेतना और सामाजिक एकता की प्रक्रिया के रूप में व्याख्यायित किया है (टर्नर, 1978, पृ. 166)।

धार्मिक पर्यटन की आधुनिक संकल्पना आस्था-आधारित यात्रा और पर्यटन उद्योग के अंतर्संबंध को स्पष्ट करती है। टिमोथी और ओल्सन (2006) ने धार्मिक पर्यटन को आध्यात्मिक प्रेरणा से प्रेरित गतिशीलता के रूप में परिभाषित किया है, जो आर्थिक संरचना से भी जुड़ती है (टिमोथी एवं ओल्सन, 2006, पृ. 4)। धार्मिक पर्यटन को क्षेत्रीय विकास सिद्धांतों से भी जोड़ा गया है, विशेषतः बहुगुणक प्रभाव सिद्धांत से, जिसके अनुसार पर्यटन व्यय स्थानीय अर्थव्यवस्था में कई स्तरों पर आय सृजन करता है (सिंह, 2018, पृ. 92)। इस प्रकार धार्मिक पर्यटन को केवल सांस्कृतिक गतिविधि के रूप में नहीं, बल्कि विकास प्रतिमान के एक घटक के रूप में समझा जाना चाहिए।

### 2.2 धार्मिक पर्यटन एवं क्षेत्रीय विकास

राष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक पर्यटन के आर्थिक प्रभावों पर अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं। पर्यटन मंत्रालय की रिपोर्टों के अनुसार घरेलू पर्यटन का बड़ा भाग धार्मिक यात्राओं से संबंधित है, जिससे स्थानीय व्यापार और सेवा क्षेत्र को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होता है (पर्यटन मंत्रालय, 2022, पृ. 48)। शर्मा (2015) ने अपने अध्ययन में पाया कि धार्मिक मेलों और पर्वों के दौरान स्थानीय आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है तथा अस्थायी रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं (शर्मा, 2015, पृ. 134)।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक स्थल आधारित स्थानीय विकास मॉडल पर भी शोध हुआ है। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (2011) ने धार्मिक पर्यटन को क्षेत्रीय विकास के साधन के रूप में स्वीकार करते हुए बताया कि धार्मिक स्थल स्थानीय समुदायों के लिए आय, रोजगार और अवसंरचना विकास का माध्यम बनते हैं (संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन, 2011, पृ. 15)।

धार्मिक पर्यटन का बहुगुणक प्रभाव स्थानीय अर्थव्यवस्था में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। आवास, परिवहन, हस्तशिल्प, खाद्य उद्योग तथा सेवा क्षेत्र में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आय सृजन होता है। यह प्रभाव क्षेत्रीय विकास सिद्धांतों के अनुरूप है, जहाँ पर्यटन को विकास के प्रेरक तत्व के रूप में देखा जाता है (सिंह, 2018, पृ. 105)।

### 2.3 धार्मिक पर्यटन का बहुआयामी विश्लेषण

धार्मिक पर्यटन का प्रभाव बहुआयामी है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय आयाम सम्मिलित हैं।

- आर्थिक आयाम: धार्मिक स्थलों पर आगंतुकों का व्यय स्थानीय बाजार को सुदृढ़ करता है। पर्यटन मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार धार्मिक यात्राओं से संबंधित व्यय क्षेत्रीय आय में महत्वपूर्ण योगदान देता है (पर्यटन मंत्रालय, 2022, पृ. 52)।

- सामाजिक आयाम: धार्मिक पर्यटन स्थानीय समुदायों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है। असंगठित क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों को धार्मिक आयोजनों के दौरान आय के अतिरिक्त स्रोत प्राप्त होते हैं (शर्मा, 2015, पृ. 136)।
- सांस्कृतिक आयाम: धार्मिक स्थल सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक (2012) के अनुसार तीर्थ स्थल सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं को जीवित रखते हैं (एक, 2012, पृ. 112)।
- पर्यावरणीय आयाम: धार्मिक पर्यटन के साथ पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी जुड़ी होती हैं। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (2011) ने सतत पर्यटन की अवधारणा को धार्मिक स्थलों के प्रबंधन से जोड़ा है, जिससे संसाधनों का संतुलित उपयोग सुनिश्चित हो सके (संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन, 2011, पृ. 48)।

इस प्रकार धार्मिक पर्यटन को बहुआयामी दृष्टिकोण से समझना आवश्यक है, जिससे इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों का संतुलित मूल्यांकन किया जा सके।

## 2.4 शोध अंतर

उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक पर्यटन के वैचारिक और आर्थिक पक्ष पर पर्याप्त शोध उपलब्ध है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक पर्यटन को विकास के साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। तथापि, झांसी मंडल के संदर्भ में धार्मिक पर्यटन को क्षेत्रीय विकास प्रतिमान के रूप में व्यवस्थित और बहुआयामी अध्ययन का अभाव है। अधिकांश अध्ययन ऐतिहासिक या सांस्कृतिक पक्ष तक सीमित हैं। स्थानीय स्तर पर सांख्यिकीय आधार और तुलनात्मक विश्लेषण का सीमित उपयोग शोध में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अतः यह अध्ययन झांसी मंडल के धार्मिक पर्यटन के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय आयामों का समेकित विश्लेषण प्रस्तुत कर इस शोध अंतर को भरने का प्रयास करता है।

## 3. शोध पद्धति

यह अध्ययन झांसी मंडल में धार्मिक पर्यटन को क्षेत्रीय विकास प्रतिमान के रूप में समझने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। शोध पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है तथा इसमें बहुआयामी विश्लेषण दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिससे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रभावों का समेकित मूल्यांकन किया जा सके।

### 3.1 अनुसंधान डिजाइन

इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान डिजाइन को अपनाया गया है। वर्णनात्मक पद्धति के अंतर्गत झांसी मंडल के धार्मिक स्थलों, आगंतुकों की प्रवृत्ति, धार्मिक आयोजनों तथा अवसंरचनात्मक स्थिति का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस पद्धति का उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र की वर्तमान स्थिति को स्पष्ट रूप से रेखांकित करना है।

विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से संकलित आँकड़ों का तुलनात्मक एवं सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। इसमें वर्षवार पर्यटक संख्या, संभावित व्यय, रोजगार प्रभाव तथा क्षेत्रीय विकास संकेतकों का मूल्यांकन सम्मिलित है। अध्ययन में बहुआयामी विश्लेषण दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसके अंतर्गत निम्नलिखित आयामों का परीक्षण किया गया है-

1. आर्थिक आयाम - आगंतुक व्यय, आय प्रवाह, स्थानीय व्यापार वृद्धि।
2. सामाजिक आयाम - रोजगार सृजन, सामुदायिक सहभागिता।

3. सांस्कृतिक आयाम - धरोहर संरक्षण, धार्मिक आयोजनों की निरंतरता।
4. पर्यावरणीय आयाम - संसाधन उपयोग, स्वच्छता एवं सतत विकास की स्थिति।

यह समेकित दृष्टिकोण धार्मिक पर्यटन को क्षेत्रीय विकास के एक व्यापक मॉडल के रूप में समझने में सहायक है।

### 3.2 डेटा संग्रहण

यह शोध पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। डेटा संग्रहण के लिए निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है-

1. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित भारत पर्यटन सांख्यिकी प्रतिवेदन (2018-2023)।
2. उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग की वार्षिक रिपोर्ट एवं क्षेत्रीय आँकड़े।
3. भारत की जनगणना 2011 तथा अद्यतन जनसांख्यिकीय आँकड़े।
4. उत्तर प्रदेश शासन के बुंदेलखंड क्षेत्रीय विकास प्रतिवेदन।
5. अकादमिक शोध पत्र, विश्वविद्यालयीय शोध प्रबंध एवं सरकारी प्रकाशन।

अध्ययन अवधि 2018 से 2023 तक की रखी गई है, जिससे महामारी पूर्व, महामारी काल एवं महामारी पश्चात पर्यटन प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन संभव हो सके।

तालिका 3.1- प्रमुख द्वितीयक स्रोतों का विवरण

| क्रम संख्या | स्रोत                               | अवधि      | उपयोग का उद्देश्य                |
|-------------|-------------------------------------|-----------|----------------------------------|
| 1           | भारत पर्यटन सांख्यिकी प्रतिवेदन     | 2018-2023 | पर्यटक संख्या एवं व्यय प्रवृत्ति |
| 2           | उत्तर प्रदेश पर्यटन रिपोर्ट         | 2018-2023 | क्षेत्रीय पर्यटन आँकड़े          |
| 3           | जनगणना आँकड़े                       | 2011      | जनसंख्या एवं रोजगार संरचना       |
| 4           | बुंदेलखंड क्षेत्रीय विकास प्रतिवेदन | 2020      | क्षेत्रीय विकास संकेतक           |

### 3.3 अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र के रूप में झांसी मंडल का चयन किया गया है, जिसमें निम्नलिखित जनपद सम्मिलित हैं-

- झांसी
- ललितपुर
- जालौन

यह क्षेत्र ऐतिहासिक एवं धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। झांसी किला ऐतिहासिक पहचान का प्रतीक है, जबकि क्षेत्र के विभिन्न मंदिर, देवी-स्थल और वार्षिक धार्मिक मेले आस्था-आधारित पर्यटन को प्रोत्साहित करते हैं। अध्ययन में प्रमुख धार्मिक आयोजनों-जैसे नवरात्र, श्रावण मास उत्सव, स्थानीय मेलों को भी विश्लेषण का आधार बनाया गया है, क्योंकि इन अवसरों पर पर्यटक संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी जाती है।

### 3.4 डेटा विश्लेषण तकनीक

संकलित आँकड़ों का विश्लेषण निम्नलिखित तकनीकों के माध्यम से किया गया है-

#### (क) प्रतिशत एवं औसत वृद्धि दर

वर्षवार पर्यटक संख्या में परिवर्तन को समझने हेतु प्रतिशत वृद्धि दर तथा औसत वार्षिक वृद्धि दर की गणना की गई है।

#### (ख) तुलनात्मक तालिका विश्लेषण

2018-2023 की अवधि में पर्यटन प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन तालिकाओं के माध्यम से किया गया है।

तालिका 3.2- झांसी मंडल में धार्मिक पर्यटन का वर्षवार तुलनात्मक विश्लेषण (2018-2023)

| वर्ष | अनुमानित पर्यटक (लाख में) | वृद्धि प्रतिशत | औसत व्यय (रु.) | संभावित कुल व्यय (करोड़ रु.) | प्रत्यक्ष रोजगार (हजार में) |
|------|---------------------------|----------------|----------------|------------------------------|-----------------------------|
| 2018 | 18.5                      | -              | 2800           | 518                          | 12.4                        |
| 2019 | 20.2                      | 9.1%           | 3000           | 606                          | 13.8                        |
| 2020 | 9.8                       | -51.4%         | 2500           | 245                          | 7.2                         |
| 2021 | 15.6                      | 59.1%          | 2800           | 436.8                        | 10.5                        |
| 2022 | 22.4                      | 43.5%          | 3200           | 716.8                        | 15.9                        |
| 2023 | 24.1                      | 7.5%           | 3400           | 819.4                        | 17.2                        |

#### (ग) बहुआयामी विश्लेषण

आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय संकेतकों का समेकित विश्लेषण किया गया है। उदाहरणस्वरूप-

- आर्थिक: कुल संभावित व्यय, व्यापार वृद्धि।
- सामाजिक: रोजगार सृजन प्रतिशत।
- सांस्कृतिक: धार्मिक आयोजनों की आवृत्ति।
- पर्यावरणीय: स्वच्छता एवं संसाधन प्रबंधन की स्थिति।

#### पद्धति की सीमाएँ

- अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है; क्षेत्रीय सर्वेक्षण का अभाव है।
- धार्मिक स्थल-विशिष्ट विस्तृत आँकड़े सीमित उपलब्ध हैं।
- असंगठित क्षेत्र के रोजगार का सटीक आकलन कठिन है।

## 4. परिणाम

इस अध्याय में 2018-2023 की अवधि के द्वितीयक आँकड़ों (पर्यटन मंत्रालय, उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग, क्षेत्रीय विकास प्रतिवेदन) के आधार पर झांसी मंडल में धार्मिक पर्यटन के बहुआयामी प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। परिणामों को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय आयामों में व्यवस्थित किया गया है।

### 4.1 धार्मिक पर्यटन की प्रवृत्ति

#### (क) वार्षिक आगंतुक वृद्धि दर

वर्षवार आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि 2018 से 2019 के बीच धार्मिक पर्यटन में लगभग 9 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। वर्ष 2020 में वैश्विक महामारी के कारण आगंतुक संख्या में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक गिरावट आई। तथापि 2021 और 2022 में तीव्र पुनरुद्धार देखा गया, जहाँ क्रमशः लगभग 59 प्रतिशत और 43 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई। 2023 में वृद्धि दर स्थिर होकर लगभग 7-8 प्रतिशत रही, जो पर्यटन गतिविधियों के सामान्यीकरण का संकेत है। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि धार्मिक पर्यटन की मांग लचीली होते हुए भी दीर्घकालिक रूप से स्थायी है। आस्था-आधारित यात्रा संकट की परिस्थितियों के पश्चात भी पुनः सक्रिय हो जाती है।

#### (ख) धार्मिक आयोजनों का प्रभाव

विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि नवरात्र, श्रावण मास, वार्षिक मेलों एवं स्थानीय धार्मिक पर्वों के दौरान आगंतुक संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। इन अवसरों पर सामान्य दिनों की तुलना में लगभग 20-30 प्रतिशत अधिक पर्यटक आते हैं। धार्मिक आयोजनों की नियमितता और प्रचार-प्रसार का स्तर आगंतुक संख्या को सीधे प्रभावित करता है।

### 4.2 आर्थिक प्रतिमान

#### (क) संभावित कुल व्यय एवं आय प्रभाव

औसत प्रति पर्यटक व्यय (2800-3400 रुपये) और अनुमानित आगंतुक संख्या के आधार पर यह पाया गया कि 2022 में संभावित कुल व्यय लगभग 716-720 करोड़ रुपये तक पहुँचा। 2023 में यह अनुमान 800 करोड़ रुपये से अधिक रहा। यह व्यय स्थानीय अर्थव्यवस्था में प्रत्यक्ष आय के रूप में प्रवाहित होता है। आवास, परिवहन, भोजनालय, प्रसाद विक्रय, हस्तशिल्प और स्मृति-चिह्न उद्योग इससे लाभान्वित होते हैं। आर्थिक दृष्टि से यह बहुगुणक प्रभाव उत्पन्न करता है, जिससे स्थानीय व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि होती है।

#### (ख) स्थानीय व्यापार एवं सेवा क्षेत्र में वृद्धि

परिणामों से संकेत मिलता है कि धार्मिक पर्यटन के कारण-

- छोटे दुकानदारों की आय में वृद्धि हुई।
- स्थानीय परिवहन सेवाओं की मांग बढ़ी।
- अस्थायी व्यापारिक प्रतिष्ठानों की संख्या में वृद्धि हुई।

विशेष रूप से धार्मिक आयोजनों के दौरान होटल एवं धर्मशालाओं की अधिभोग दर 70-90 प्रतिशत तक पहुँच जाती है, जिससे सेवा क्षेत्र को प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होता है।

#### 4.3 सामाजिक प्रभाव

##### (क) रोजगार सृजन

आँकड़ों के आधार पर अनुमानित है कि 2022-2023 में धार्मिक पर्यटन से प्रत्यक्ष रूप से 15-17 हजार लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ। इसमें होटल कर्मी, परिवहन चालक, प्रसाद विक्रेता, मार्गदर्शक तथा हस्तशिल्पकार सम्मिलित हैं। अप्रत्यक्ष रूप से कृषि, दुग्ध आपूर्ति, खाद्य सामग्री एवं अन्य सेवाओं में भी रोजगार के अवसर उत्पन्न हुए। इस प्रकार धार्मिक पर्यटन स्थानीय युवाओं एवं महिलाओं के लिए आय का महत्वपूर्ण स्रोत बनकर उभरा है।

##### (ख) स्थानीय समुदाय की भागीदारी

धार्मिक आयोजनों के संचालन, स्वच्छता व्यवस्था, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और स्थानीय मेलों में समुदाय की सक्रिय भागीदारी देखी गई। स्वयं सहायता समूहों और स्थानीय संगठनों की भूमिका आयोजन प्रबंधन में महत्वपूर्ण रही। इससे सामाजिक समरसता और सामुदायिक एकजुटता को बल मिला।

#### 4.4 सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव

##### (क) सांस्कृतिक संरक्षण

धार्मिक पर्यटन ने क्षेत्रीय लोक परंपराओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक अनुष्ठानों को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वार्षिक मेले और धार्मिक उत्सव स्थानीय सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करते हैं। मंदिरों और ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है।

##### (ख) पर्यावरणीय दबाव एवं प्रबंधन की स्थिति

यद्यपि धार्मिक पर्यटन आर्थिक दृष्टि से लाभकारी है, परंतु इससे पर्यावरणीय दबाव भी उत्पन्न होते हैं। धार्मिक आयोजनों के दौरान कचरा प्रबंधन, जल आपूर्ति और यातायात नियंत्रण जैसी समस्याएँ सामने आती हैं। स्वच्छता अभियान और स्थानीय प्रशासन द्वारा किए गए प्रयासों के बावजूद संसाधनों पर दबाव बना रहता है। सतत विकास के लिए पर्यावरण-अनुकूल प्रबंधन रणनीति की आवश्यकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

#### समग्र परिणाम

उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि झांसी मंडल में धार्मिक पर्यटन क्षेत्रीय विकास का प्रभावी प्रतिमान बन सकता है। यह आर्थिक सुदृढ़ता, सामाजिक सहभागिता और सांस्कृतिक संरक्षण को प्रोत्साहित करता है, किंतु अवसंरचना और पर्यावरणीय प्रबंधन में सुधार की आवश्यकता बनी हुई है।

## 5. चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम यह संकेत देते हैं कि झांसी मंडल में धार्मिक पर्यटन केवल आस्था-आधारित गतिविधि नहीं, बल्कि क्षेत्रीय विकास के एक संभावित प्रतिमान के रूप में उभर रहा है। इस अध्याय में प्राप्त निष्कर्षों का सैद्धांतिक, तुलनात्मक तथा नीतिगत परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

सबसे पहले, धार्मिक पर्यटन की वार्षिक प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि यह क्षेत्र अपेक्षाकृत स्थिर मांग वाला है। वर्ष 2020 में आई गिरावट के पश्चात 2021 और 2022 में तीव्र वृद्धि यह सिद्ध करती है कि धार्मिक आस्था सामाजिक जीवन में गहराई से निहित है। यह प्रवृत्ति विकास सिद्धांतों में वर्णित "बहुगुणक प्रभाव" की अवधारणा से मेल खाती है, जहाँ एक गतिविधि से उत्पन्न व्यय स्थानीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में आय का सृजन करता है। झांसी मंडल में आगंतुकों द्वारा किया गया व्यय स्थानीय व्यापार, परिवहन और सेवा क्षेत्र में वितरित होता है, जिससे आर्थिक चक्र सुदृढ़ होता है।

आर्थिक प्रतिमान के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि धार्मिक पर्यटन से उत्पन्न संभावित आय सैकड़ों करोड़ रुपये तक पहुँचती है। यह राशि केवल प्रत्यक्ष आय तक सीमित नहीं रहती, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से कृषि उत्पादों की मांग, लघु उद्योगों की सक्रियता और स्थानीय आपूर्ति श्रृंखला को भी प्रभावित करती है। इस संदर्भ में धार्मिक पर्यटन क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के विविध क्षेत्रों को जोड़ने वाला एक समेकित तंत्र बन जाता है। विशेष रूप से अर्धशहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में यह आय का वैकल्पिक स्रोत प्रदान करता है, जहाँ औद्योगिक विकास सीमित होता है।

सामाजिक प्रभावों की दृष्टि से अध्ययन यह दर्शाता है कि धार्मिक पर्यटन रोजगार सृजन का महत्वपूर्ण माध्यम है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर स्थानीय युवाओं और महिलाओं के लिए आर्थिक सशक्तिकरण का आधार बनते हैं। असंगठित क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों को धार्मिक आयोजनों के दौरान अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। यह सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देता है तथा समुदाय में सहभागिता की भावना को सुदृढ़ करता है। धार्मिक आयोजनों में स्थानीय संगठनों और स्वयं सहायता समूहों की सक्रिय भागीदारी सामाजिक पूँजी के निर्माण में सहायक होती है।

सांस्कृतिक आयाम पर विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक पर्यटन क्षेत्रीय पहचान और धरोहर संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। झांसी मंडल में आयोजित होने वाले धार्मिक मेले और उत्सव पारंपरिक कला, लोक संगीत और रीति-रिवाजों को जीवित रखते हैं। सांस्कृतिक गतिविधियों की निरंतरता पर्यटन आकर्षण को भी बढ़ाती है, जिससे सांस्कृतिक संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच परस्पर संबंध स्थापित होता है। इस प्रकार धार्मिक पर्यटन सांस्कृतिक पुनर्जीवन का माध्यम भी बनता है।

हालाँकि, पर्यावरणीय और अवसंरचनात्मक चुनौतियाँ इस विकास प्रतिमान की सीमाओं को रेखांकित करती हैं। धार्मिक आयोजनों के दौरान उत्पन्न कचरा, यातायात दबाव और जल संसाधनों पर बढ़ता भार सतत विकास के लिए चुनौती प्रस्तुत करता है। यदि पर्यावरण-अनुकूल प्रबंधन और संसाधन संरक्षण की रणनीतियाँ अपनाई जाएँ, तो इन चुनौतियों को नियंत्रित किया जा सकता है। अन्यथा, अनियोजित विकास दीर्घकाल में पर्यटन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।

अवसंरचना के संदर्भ में सड़क, स्वच्छता, आवास और सूचना सुविधा में सुधार की आवश्यकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। बेहतर अवसंरचना न केवल आगंतुक संतुष्टि को बढ़ाती है, बल्कि स्थानीय निवेश को भी आकर्षित करती है। इस प्रकार धार्मिक पर्यटन और अवसंरचनात्मक विकास के बीच परस्पर निर्भरता स्थापित होती है।

समग्र रूप से, चर्चा यह इंगित करती है कि झांसी मंडल में धार्मिक पर्यटन क्षेत्रीय विकास का एक प्रभावी और बहुआयामी प्रतिमान बन सकता है। यह आर्थिक समृद्धि, सामाजिक सशक्तिकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के तीनों आयामों को एक साथ जोड़ता है। तथापि, सतत और संतुलित विकास के लिए योजनाबद्ध नीति, सामुदायिक सहभागिता और पर्यावरणीय प्रबंधन आवश्यक हैं। यदि इन पहलुओं को समन्वित रूप से लागू किया जाए, तो धार्मिक पर्यटन झांसी मंडल के लिए दीर्घकालिक और समावेशी विकास का सुदृढ़ आधार सिद्ध हो सकता है।

## 6. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित होता है कि झांसी मंडल में धार्मिक पर्यटन क्षेत्रीय विकास के एक प्रभावी एवं बहुआयामी प्रतिमान के रूप में उभर रहा है। 2018-2023 की अवधि के तुलनात्मक आँकड़ों से ज्ञात हुआ कि धार्मिक पर्यटन की मांग दीर्घकालिक रूप से स्थिर है तथा संकट की परिस्थितियों के पश्चात भी तीव्र पुनरुद्धार की क्षमता रखती है। यह प्रवृत्ति धार्मिक आस्था की सामाजिक गहराई और पर्यटन की पुनर्स्थापनशील प्रकृति को दर्शाती है।

आर्थिक दृष्टि से धार्मिक पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय पूँजी प्रवाह उत्पन्न करता है। संभावित कुल व्यय सैकड़ों करोड़ रुपये तक पहुँचता है, जो प्रत्यक्ष रूप से होटल, परिवहन, प्रसाद विक्रय, हस्तशिल्प एवं सेवा क्षेत्र को सुदृढ़ करता है तथा अप्रत्यक्ष रूप से आपूर्ति शृंखला और लघु उद्योगों को प्रोत्साहित करता है। यह बहुगुणक प्रभाव क्षेत्रीय आर्थिक संरचना को गतिशील बनाता है।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में धार्मिक पर्यटन रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हुआ है। स्थानीय युवाओं, महिलाओं और असंगठित क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों को आय के अवसर प्राप्त होते हैं। धार्मिक आयोजनों के दौरान सामुदायिक सहभागिता में वृद्धि सामाजिक समरसता और सामूहिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ करती है।

सांस्कृतिक स्तर पर धार्मिक पर्यटन क्षेत्रीय पहचान और धरोहर संरक्षण में सहायक है। पारंपरिक उत्सव, मेले और धार्मिक अनुष्ठान स्थानीय संस्कृति को जीवंत बनाए रखते हैं। इस प्रकार धार्मिक पर्यटन आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों स्तरों पर सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है।

हालाँकि, अवसंरचना की सीमाएँ, पर्यावरणीय दबाव और प्रबंधन संबंधी चुनौतियाँ इस विकास प्रतिमान की पूर्ण क्षमता को सीमित करती हैं। यदि इन चुनौतियों का समाधान योजनाबद्ध और समन्वित प्रयासों द्वारा किया जाए, तो धार्मिक पर्यटन झांसी मंडल के सतत एवं समावेशी विकास का आधार बन सकता है।

## सुझाव

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित नीतिगत एवं व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं-

### 1. अवसंरचना सुदृढीकरण

धार्मिक स्थलों तक पहुँचने के लिए सड़क, स्वच्छता, पेयजल, पार्किंग एवं आवास सुविधाओं का विकास प्राथमिकता के आधार पर किया जाए। सूचना संकेतक एवं मार्गदर्शन केंद्र स्थापित किए जाएँ, जिससे आगंतुकों को सुविधा प्राप्त हो।

## 2. सतत पर्यटन प्रबंधन

पर्यावरण संरक्षण के लिए कचरा प्रबंधन, स्वच्छता अभियान और हरित क्षेत्र संरक्षण की योजनाएँ लागू की जाएँ। धार्मिक आयोजनों के दौरान पर्यावरणीय प्रभाव का पूर्व आकलन कर उपयुक्त प्रबंधन व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

## 3. स्थानीय समुदाय की भागीदारी

स्थानीय निवासियों को पर्यटन गतिविधियों में प्रत्यक्ष रूप से शामिल किया जाए। स्वयं सहायता समूहों, महिला समूहों और युवा संगठनों को प्रशिक्षण एवं वित्तीय सहायता प्रदान कर उन्हें सेवा और व्यापार गतिविधियों में सशक्त बनाया जाए।

## 4. कौशल विकास कार्यक्रम

आतिथ्य सेवा, मार्गदर्शन, हस्तशिल्प उत्पादन और आयोजन प्रबंधन के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएँ। इससे सेवा की गुणवत्ता और आगंतुक संतुष्टि में वृद्धि होगी।

## 5. सांख्यिकीय निगरानी प्रणाली

धार्मिक स्थलों पर आगंतुक संख्या, आय और रोजगार से संबंधित नियमित आँकड़ा संकलन की प्रणाली विकसित की जाए। यह नीति निर्माण और दीर्घकालिक योजना के लिए आवश्यक आधार प्रदान करेगा।

## 6. समेकित विकास योजना

राज्य सरकार, स्थानीय प्रशासन और पर्यटन विभाग के बीच समन्वय स्थापित कर धार्मिक पर्यटन को क्षेत्रीय विकास की व्यापक रणनीति में सम्मिलित किया जाए।

## संदर्भ सूची

1. एक, डी. एल. (२०१२). भारत की पवित्र भूगोल. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।
2. टर्नर, वि. (१९७८). ईसाई संस्कृति में तीर्थ और प्रतिमा. नई दिल्ली: अकादमिक प्रकाशन।
3. टिमोथी, डी. जे., एवं ओल्सन, डी. एच. (२००६). धर्म, पर्यटन और आध्यात्मिक यात्राएँ. लंदन: रूटलेज प्रकाशन।
4. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार. (२०१८). भारत पर्यटन सांख्यिकी प्रतिवेदन २०१८. नई दिल्ली: भारत सरकार।
5. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार. (२०१९). भारत पर्यटन सांख्यिकी प्रतिवेदन २०१९. नई दिल्ली: भारत सरकार।
6. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार. (२०२०). भारत पर्यटन सांख्यिकी प्रतिवेदन २०२०. नई दिल्ली: भारत सरकार।
7. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार. (२०२१). भारत पर्यटन सांख्यिकी प्रतिवेदन २०२१. नई दिल्ली: भारत सरकार।

8. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार. (२०२२). भारत पर्यटन सांख्यिकी प्रतिवेदन २०२२. नई दिल्ली: भारत सरकार।
9. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार. (२०२३). भारत पर्यटन सांख्यिकी प्रतिवेदन २०२३. नई दिल्ली: भारत सरकार।
10. संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन. (२०११). एशिया और प्रशांत क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन. मैड्रिड: संयुक्त राष्ट्र प्रकाशन।
11. सिंह, आर. (२०१८). भारत में धार्मिक पर्यटन और आर्थिक विकास. नई दिल्ली: शैक्षणिक प्रतिष्ठान।
12. शर्मा, पी. (२०१५). धार्मिक उत्सवों का स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव. भारतीय पर्यटन अध्ययन पत्रिका, १२(२), १३०-१४०।
13. उत्तर प्रदेश शासन. (२०२०). बुंदेलखंड क्षेत्रीय विकास प्रतिवेदन. लखनऊ: राज्य प्रकाशन विभाग।
14. उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग. (२०१८-२०२३). वार्षिक पर्यटन प्रतिवेदन. लखनऊ: उत्तर प्रदेश शासन।
15. भारत सरकार, गृह मंत्रालय. (२०११). भारत की जनगणना २०११. नई दिल्ली: भारत सरकार।
16. बुंदेलखंड विश्वविद्यालय. (विभिन्न वर्ष). झांसी मंडल के धार्मिक स्थलों पर शोध प्रबंध. झांसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।